पाठ 2

एक नई शुरुआत

– सुश्री कमला चमोला

7YF85S

मनोवैज्ञानिकों और शिक्षाशास्त्रियों का यह मत है कि विद्रोही बच्चों के प्रति उपेक्षा का भाव या दण्डात्मक कार्यवाही उन्हें और अधिक उग्र बनाती है। इसके विपरीत यदि उन्हें प्रोत्साहन मिले, उनको उत्तरदायित्वपूर्ण काम सौंपा जाए तो वे सामान्य बालकों से अधिक अच्छा कार्य कर सकते हैं। कहानीकार ने इसी सिद्धांत पर प्रस्तुत कहानी की रचना की है। प्रोत्साहन पाकर और उत्तरदायित्व का भार पड़ने पर सुधीर के चरित्र में जो बदलाव आया, वही प्रस्तुत कहानी का मुख्य तथ्य है, बाल मनोविज्ञान पर आधारित यह कहानी बहुत महत्पवूर्ण भूमिका अदा करती है।

''श्रीकांत को कक्षा का मॉनीटर बनाया जाता है क्योंकि कक्षा के 85 प्रतिशत लड़कों ने उसके नाम का समर्थन किया है।'' कक्षाध्यापक शर्मा जी ने यह घोषणा की तो सभी लड़के तालियाँ बजाने लगे। कक्षा में सिर्फ सुधीर ही ऐसा लड़का था जो तिरछी आँखों से श्रीकांत को घूर रहा था।

श्रीकांत ने उसकी ओर देखा तो उसने अकड़कर गर्दन दूसरी ओर घुमा ली। श्रीकांत मुस्करा पड़ा। उसे सुधीर से ऐसे ही व्यवहार की अपेक्षा थी। उसे इस शहर में आए छह माह होने को थे। उसकी शराफत और होशियारी से सभी लड़के प्रभावित थे। पढ़ाई में भी वह अच्छा था। सभी लड़कों के साथ उसकी दोस्ती हो गई थी। एक सुधीर ही था जो उससे बात करने में भी अपनी हेठी समझता था। श्रीकांत को लगता जैसे सुधीर मन–ही–मन उससे ईर्ष्या करता है। सुधीर हद दर्जे का गुस्सैल, अक्खड़ और शरारती किस्म का लड़का था। श्रीकांत को लड़कों से पता चला था कि वह गलत सोहबत में भी पड़ गया है। सभी उससे बात करने में कतराते थे। कक्षा की लड़कियाँ तो उसकी ओर नजर उठाकर भी नहीं देखती थीं। जब पीरियड खत्म हुआ तो श्रीकांत सुधीर के पास जाकर बोला, ''तुम्हें मेरा मॉनीटर बनना पसंद नहीं आया क्या?'' ''मॉनीटर बने हो, राजा नहीं– मॉनीटरी सँभालनी मुश्किल हो जाएगी तुम्हारे लिए और हाँ, मुझ पर रौब गाँठने की कोशिश भी मत करना वरना...।'' श्रीकांत को एक अप्रत्यक्ष–सी धमकी देकर सुधीर चला गया।

सुधीर का व्यवहार अजीब–सा लगा श्रीकांत को। आखिर वह इस कदर बिगड़ क्यों गया है? अब वह दसवीं कक्षा में है, समझदार है, फिर गुंडों जैसी धमकियाँ क्यों देता है? कक्षा में उसने सुमेश से सुधीर के बारे में पूछा तो सुमेश बोला, ''शरारती तो खैर सुधीर बचपन से ही था, फिर गलत संगत में भी पड़ गया। तब हम आठवीं कक्षा में थे। इसे सजा के रूप में पूरे स्कूल के सामने स्टेज पर खड़ा रखा गया। उस घटना के बाद सबने इससे बात करना कम कर दिया। सभी अध्यापक भी इसे गैर जिम्मेदार और बिगड़ा हुआ लड़का मानने लगे और फिर तो सचमुच सुधीर बिगड़ता ही गया। अब तो जैसे पूरा दादा ही बन गया है।''

सुमेश की बात सुनकर श्रीकांत सोच में डूब गया। उसे लगा सुधीर को गिरावट की इस हद तक पहुँचाने में शायद कक्षा के लड़के–लड़कियाँ और अध्यापक सभी का हाथ है। उसे सदा प्रताड़ना और डाँट ही सुनने को मिली है। प्रार्थना के समय उसे पूरे स्कूल के सामने खड़ा रखा गया। शायद इस सार्वजनिक अपमान ने ही उसका स्वभाव विद्रोही बना दिया है। अब अगर उसे जिम्मेदार लड़का मानकर काम सौंपे जाएँ, हर काम में उसका सहयोग और सलाह लेकर उसे भी अपने साथ शामिल किया जाए तो शायद वह सुधर जाए।

सुधीर के कारण श्रीकांत को मॉनीटर का काम सँभालने में बड़ी मुश्किल हो रही थी । सुधीर ऐसी हरकतें करता जिससे श्रीकांत को परेशानी हो और उसे डाँट पड़े। जब तक ब्लैक बोर्ड साफ करके श्रीकांत चॉक लेकर आता, सुधीर ब्लैक बोर्ड पर हास्यास्पद कार्टून बना देता।

अध्यापक के आने से पहले वह और उसके दो–एक साथी इस कदर शोर मचाते कि मॉनीटर यानी श्रीकांत को तगड़ी डाँट खानी पड़ती। मगर श्रीकांत ने कभी अध्यापक से सुधीर की शिकायत नहीं की।

स्कूल का वार्षिकोत्सव करीब आ रहा था। कक्षाध्यापक 'प्रायश्चित' नाटक के लिए पात्रों का चयन कर रहे थे। श्रीकांत को राणा की भूमिका के लिए चुना गया तो वह तुरंत खड़ा होकर बोला, ''सर, शक्ति सिंह की भूमिका के लिए आप सुधीर को ले लीजिए; उसकी आवाज़ में गंभीरता और गहराई है। वह यह भूमिका अच्छी तरह कर सकता है।''

''मगर...।'' अध्यापक संदेह प्रकट करने लगे तो श्रीकांत उनकी बात काटकर बोला, ''मानता हूँ कि नाटक में प्रमुख पात्र शक्ति सिंह ही है, पर उसे सुधीर पूरी निष्ठा, लगन से कर पाएगा, इसका मुझे पूरा विश्वास है सर...।'' इस तरह शक्ति सिंह की भूमिका के लिए सुधीर को चुन लिया गया। सुधीर कई वर्ष बाद स्कूल के किसी आयोजन में भाग ले रहा था। वह कृतज्ञता भरी नजरों से बीच–बीच में श्रीकांत को देख लेता था।

प्रतिदिन नाटक का अभ्यास होता था। सुधीर अब अपेक्षाकृत शांत नज़र आता था। एक दिन अभ्यास में कुछ देर हो गई। अँधेरा घिरने लगा था। अध्यापक बोले, ''श्रीकांत, अँधेरा हो रहा है, तुम लोग तो चले जाओगे पर पहले तुम लोगों को इन लड़कियों को इनके घर तक पहुँचाना होगा।''

''आप चिंता न करें सर, हम लोग इन्हें घर तक पहुँचा कर आएँगे। रीता और नंदा को मैं छोड़कर आऊँगा; वंदना और मीरा को रवि और गीता व सुप्रिया को सुधीर...।''

''क्या?'' गीता और सुप्रिया सुधीर के नाम से चौंक पड़ीं। सुप्रिया बोली, ''तुम्हारा दिमाग तो खराब नहीं है, श्रीकांत। हमें सुधीर जैसे बदमाश और बिगड़े हुए लड़के के साथ भेज रहे हो?''

''सुधीर बदमाश नहीं है,'' श्रीकांत बोला। ''मै इतने दिनों में उसे अच्छी तरह से जान गया हूँ। हर काम में उसे गैर–जिम्मेदार और बिगड़ा हुआ मानकर सभी ने उसे अलग–थलग रखा है। अब हमें उसे अपने करीब लाना है, उसमें जिम्मेदारी की भावना पैदा करनी है। गीता और सुप्रिया, तुम दोनों विश्वास रखो, सुधीर तुम्हें हम सबसे अधिक सुरक्षित ढंग से घर तक छोड़कर आएगा।''इसके बाद उसने सुधीर को आवाज लगाई –

'' सुधीर! जरा इधर आओ। हम सबको इन लड़कियों को घर तक पहुँचाने की जिम्मेदारी निभानी है। मैं रीता और सुनंदा को साथ ले जा रहा हूँ, तुम गीता और सुप्रिया को छोड़ आओ।'' श्रीकांत की बात पर सुधीर फटी–फटी आँखों से श्रीकांत को देखने लगा। श्रीकांत ने उसे इस लायक समझा, यह सोचकर उसकी आँखों में हल्की–सी नमी उतर आई, जिसे छिपाकर वह बोला, ''क्या गीता और सुप्रिया तैयार हैं?''

''हाँ–हाँ, क्यों नहीं, चलो,'' सुप्रिया मुस्कराकर बोली।

अगले दिन गीता ने श्रीकांत से हँसकर कहा, ''भई, जबर्दस्त बाडीगार्ड है सुधीर। हमें भी भीड़ से ऐसे बचाकर ले जा रहा था, जैसे हम काँच की गुड़ियाँ हों जो किसी के छूने भर से बिखर जाएँगी। सच, सुधीर का यह रूप तो हमने कल पहली बार देखा।''

श्रीकांत के होठों पर एक मुस्कान–सी आ गई। सुधीर को सुधारने के लिए उसके कदम सही दिशा में उठ रहे हैं। वार्षिकोत्सव सफल रहा और नाटक में जब सुधीर को सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार मिला तो हॉल में देर तक तालियाँ गूँजती रहीं। सुधीर के चेहरे पर संकोच भरा गर्व का भाव था।

सभी छात्र–छात्राओं को स्कूल की ओर से पिकनिक पर ले जाया जा रहा था। सभी को पंद्रह–पंद्रह रुपए जमा करने थे। श्रीकांत के पास सारे छात्र पैसा जमा करने लगे तो वह बोला, ''मुझे और भी कई काम करने हैं, तुम लोग अपने पैसे सुधीर के पास जमा करो।''

''मेरे पास?'' सुधीर चौंक पड़ा। अभी तक उसके साथ 'चोर' जैसा शब्द जुड़ा था। वह सोचने लगा, 'क्या श्रीकांत को पता नहीं कि एक बार मैं फीस के पैसे चुराते हुए पकड़ा गया था।'

''हाँ, पैसे तुम ही इकट्ठे करोगे, सुधीर,'' श्रीकांत बोला, ''बाद में वर्मा सर के पास जमा कर आना।'' श्रीकांत तो बाहर चला गया पर सुधीर हतप्रभ–सा बैठा था। खिड़की से श्रीकांत ने झाँका तो खामोश सोच में निमग्न देख, उसके होठों पर एक मुस्कान आ गई।

सुधीर का स्वभाव अब दिनोंदिन बदल रहा था। अक्खड़ता की जगह अब उसकी बातों में सौम्यता आने लगी थी। गाली–गलौज और लड़ाई भी कम हो गई थी। उसके अंदर आए इस परिवर्तन को सभी लड़के लक्ष्य कर रहे थे।

एक दिन श्रीकांत कक्षा के अपने सहपाठियों से बोला, ''आज सुधीर का जन्मदिन है; शाम को हम लोग उसे बधाई देने उसके घर चलेंगे।''

''लेकिन मेरी माँ ने तो उसके घर जाने को सख्त मना किया हुआ है,'' नीरज बोला।

''लेकिन यह तब किया था जब वह सचमुच बिगड़ा हुआ था और अब तुम सभी देख रहे हो कि वह एक अच्छा लड़का बनने के प्रयास में जुटा है। कक्षा के लड़के उसे बिगड़ा जानकर शुरू से ही उससे अलग–थलग रहे, इसी कारण वह और भी बिगड़ता गया। अब हम लोग उसके करीब जाएँगे तो उसे भी सहारा मिलेगा ऊपर उठने में।''

शाम को दरवाजे पर खट्–खट् हुई तो सुधीर ने दरवाजा खोला। बाहर श्रीकांत सहित कक्षा के 8–10 लड़कों को खड़ा देख वह सकपका गया। सभी मुस्कराकर बोले, ''जन्मदिन मुबारक हो सुधीर....।''

''लेकिन तुम लोगों को पता कैसे चला कि आज मेरा जन्मदिन है?''

सुधीर अब भी उलझन में खड़ा था। इस पर श्रीकांत बोला, ''ताड़ने वाले कयामत की नज़र रखते हैं जनाब। जब परीक्षा के लिए तुम फार्म भर रहे थे तब मैंने तुम्हारी जन्मतिथि देख ली थी। अच्छा, अब अंदर आने को भी कहोगे या बाहर ही खड़ा रखोगे?''

''ओह–आओ, आओ; अंदर आ जाओ।'' सुधीर के चेहरे से प्रसन्नता छलक रही थी। सबने तोहफे मेज पर रख दिए। तभी सुधीर की माँ आई और बोली, ''तुम लोगों ने बहुत अच्छा किया जो इसके जन्मदिन पर आए। चार–पाँच साल से इसने जन्मदिन मनाना ही छोड़ दिया था। तुम लोग बैठो, मैं पकौड़े तलती हूँ।''

''देखिए आंटी, कहीं बेसन कम न पड़ जाए, हम लोग बिना भरपेट खाए टलने वाले नहीं,'' श्रीकांत बोला तो सुधीर की माँ मुस्कराकर बोलीं, ''घबराओ मत, बहुत बेसन है।''

पकौड़े खाते हुए सभी लड़के खिलखिलाकर हँस रहे थे। सुधीर भी खुलकर बातचीत में हिस्सा ले रहा था। उसके चेहरे पर वही सौम्यता और भोलापन था जो इस उम्र के किशोरों में होता है। श्रीकांत को लगा जैसे वह सुधीर का कोई और ही रूप देख रहा है।

अगले दिन वह कक्षा में खड़े होकर शर्मा सर से बोला, ''सर, मुझे मॉनीटर बने लगभग तीन माह होने को हैं। अब जिम्मेदारी मैं सुधीर को सौंपना चाहता हूँ।''

''ठीक है, आज से सुधीर मॉनीटर होगा।'' शर्मा जी का निर्णय सुनकर सभी लड़के तालियाँ बजाने लगे। सुधीर सकुचाया–सा आँखें झुकाए बैठा था। बीच–बीच में वह कृतज्ञता भरी नजर श्रीकांत पर भी डाल रहा था, मानो कह रहा हो, ''मुझे इस ऊँचाई तक पहुँचाने में तुम्हारा ही हाथ रहा है।'' श्रीकांत भी उसकी मौन भाषा बखूबी समझ रहा था।

शब्दार्थ :– **कृतज्ञता** – किए हुए उपकार को मानने का भाव, एहसानमंदी, **हतप्रभ**–निस्तेज, कांतिहीन, आश्चर्यचकित, **कयामत**–महाप्रलय, आफत, **सोहबत**–संगति, संसर्ग, **कतराना**–किसी वस्तु या व्यक्ति को बचाकर किनारे से निकल जाना, **शरारती**–नटखट, पाजी, **प्रायश्चित**–पश्चाताप, **अक्खड़ता** – किसी का कहना न माननेवाला, उग्र, उद्धत, **बखूबी** – भली भाँति, अच्छी तरह से, पूर्ण रूप से पूर्णतया।

अभ्यास

पाठ से

1. श्रीकांत को कक्षा का मॉनीटर क्यों बनाया गया ?
2. श्रीकांत को मॉनीटर बनाए जाने पर सुधीर की क्या प्रतिक्रिया थी ?
3. श्रीकांत को कक्षा के साथी सुधीर से किस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा थी ?
4. सुधीर मन–ही–मन श्रीकांत से ईर्ष्या क्यों करता था ?
5. किस घटना के बाद सबने सुधीर से बात करना कम कर दिया था ?
6. सुधीर के बारे में छात्रों और शिक्षकों की क्या मान्यताएं थीं ?
7. सुधीर ऐसा कौन–सा काम करता था जिससे श्रीकांत को मॉनीटर का काम सम्हालने में परेशानी होती थी ?
8. सुमेश की बात सुनने के बाद श्रीकांत सुधीर की गिरावट के लिए किसको उत्तरदायी मानता है और क्यों ?

9. सुधीर पर विश्वास करके श्रीकांत ने उसमें क्या परिवर्तन लाया ?
10. सुधीर के व्यवहार और व्यक्तित्व में कैसे परिवर्तन आया ?
11. सुधीर की आँखों में नमीं क्यों उतर आयी ?
12. "श्रीकांत उसकी मौन भाषा को बखूबी समझ रहा था" पंक्ति का भाव अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।
13. सुधीर का परिवर्तित रूप गीता और सुप्रिया ने कब महसूस किया ?

पाठ से आगे

7YP47F

1. किसी कक्षा कक्ष में मॉनीटर की क्या भूमिका होती है? परस्पर विचार कर लिखिए।
2. कक्षा आठवीं में सुधीर को सजा के रूप में पूरे स्कूल के सामने स्टेज पर खड़ा रखा गया! किसी भी विद्यार्थी को इस प्रकार से सार्वजनिक तौर पर सजा देना आपको कितना उचित लगता है? साथी से बातचीत कर इसके दोनों पक्षों पर अपनी समझ लिखिए।
3. पाठ में आपको एक ही कक्षा और लगभग एक उम्र के दो किशोर बच्चों सुधीर और श्रीकान्त का व्यवहार देखने को मिलता है। कौन सा व्यवहार आपको आकर्षित करता है और क्यों ?
4. सुधीर की माँ ने बताया कि सुधीर ने चार–पाँच वर्ष पूर्व से अपना जन्मदिन मनाना छोड़ दिया था। सुधीर ने ऐसा क्यों किया होगा? साथियों से वार्तालाप कर कल्पना अथवा अनुमान से इस प्रश्न का उत्तर लिखिए।
5. कल्पना कीजिये आप अगर श्रीकांत के स्थान पर कक्षा के मॉनीटर होते और आप के किसी साथी का आपके प्रति व्यवहार सुधीर की तरह होता तो आप क्या करते? उन्हें लिखिए।

भाषा से

1. पाठ में आया है कि "सुधीर को सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार मिला' जो गुणबोधक विशेषण है। गुणबोधक विशेषणों में प्रायः एक तुलना का भाव देखने को मिलता है जैसे– श्रेष्ठ (मूल अवस्था) श्रेष्ठतर (उत्तर अवस्था अर्थात दो विशेष्यों में तुलना भाव) श्रेष्ठतम् (उत्तम अवस्था अर्थात् सभी विशेष्यों में सबसे अच्छा) उत्तर और उत्तम अवस्थाओं के बोधक संस्कृत के 'तर' और तम् प्रत्यय हैं। इन प्रत्ययों का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित शब्दों को तीनों गुणबोधक विशेषण स्वरूप को बदलते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए– उच्च, वृहत्, गुरु, प्राचीन, लघु, अधिक।

7YXZ93

2. निम्नांकित तालिका में दिए गए विशेषणों से भाववाचक संज्ञाएँ बनाइए। एक उदाहरण आपके लिए हल किया गया है :–

विशेषण	भाववाचक संज्ञा
गहरा	गहराई
बड़ा	
गुरू	
सुंदर	
मधुर	

3. आपने तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशज शब्दों के बारे में पढ़ा है। पाठ में गुस्सैल और अक्खड़ शब्द का प्रयोग हुआ है जो देशज हैं अर्थात् वैसे शब्द, जिनका जन्म स्थानीय तौर पर हुआ है। पाठ से और अपने स्थानीय परिवेश में प्रयुक्त ऐसे पाँच शब्दों को चुनकर वाक्य में प्रयोग कीजिये जो देशज शब्द कहे जाते हैं।

4. इस पाठ में निम्नलिखित मुहावरों का प्रयोग हुआ है –

   तिरछी आँखों से घूरना, बात करने में कतराना, हाथ होना, फटी–फटी आँखों से देखना। पाठ में इन मुहावरों से बने वाक्यों को तलाश कर लिखिए। फिर इन मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

5. 'अक्खड़' विशेषण शब्द है। इसमें 'बाज़' जोड़कर 'अक्खड़बाज़' बना है। 'बाज़' का अर्थ माहिर होने के भाव से है। आप भी किन्हीं दो अन्य शब्दों में 'बाज़' जोड़कर नए शब्द बनाइए और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

6. इस कहानी को संक्षेप में अपने शब्दों में लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. इस पाठ का एक छोटी सी नाटिका में रूपांतरण कर इसे विद्यालय में प्रस्तुत कीजिए।
2. 'दंड और उपेक्षा का भाव और बच्चों पर प्रभाव'' विषय पर पहले कक्षा स्तर पर और फिर विद्यालय स्तर पर वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन कर उसमें हुई चर्चा के मुख्य बिन्दुओं को लिख कर कक्षा–कक्ष में प्रदर्शित कीजिए।

7Z7VAQ